पहरेदारों उठो!

10 दिन की पेंटेकोस्ट यात्रा प्रार्थना, यहूदी विश्व के लिए

मई 30th–8th जून 2025

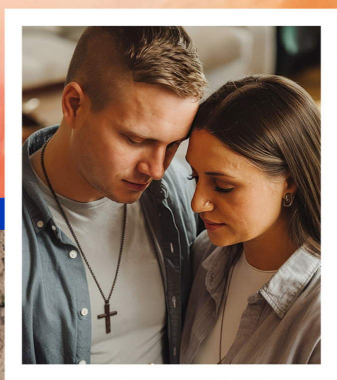

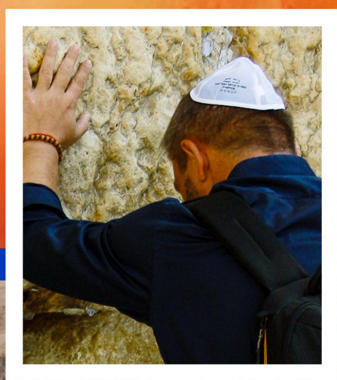

INTERNATIONAL PRAYER CONNECT · 110 Cities · 24:14 · WEA EST. 1846 WORLD EVANGELICAL ALLIANCE · PRAYER TOOLS

www.110cities.com

WATCHMEN
ARISE!
A 10 Day Pentecost Journey of
Prayer for the Jewish World

सामग्री

प्रस्तावना 03

दिन 1: यरूशलेम के लिए पहरेदार 04
यरूशलेम में मसीही यहूदी समुदाय के पहरेदारों के रूप में प्रार्थना करना।

दिन 2: खोए हुए के लिए पिता का हृदय 05
यहूदी लोगों को उनके स्वर्गीय पिता के अटूट प्रेम के पास वापस बुलाना।

दिन 3: अधिक मजदूरों के लिए प्रार्थना करें 06
परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह सुसमाचार के संदेशवाहकों को पैदा करें और उन्हें विश्व भर के यहूदी लोगों तक भेंजें ।

दिन 4: पिन्तेकुस्त / शावोत 07
उत्सव मनाना कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा उंडेला गया जिससे उनकी कलीसिया का सशक्तिकरण हुआ।

दिन 5: अलियाह — वापसी 08
विश्व भर के देशों से घर लौट रहे यहूदी लोगों के लिए मध्यस्थता करना।

दिन 6: भारत में यहूदी लोग 09
भारत भर में यहूदी समुदायों तथा वहां यात्रा करने वाले इस्राएली युवाओं के लिए प्रार्थना करना।

दिन 7: यहूदी प्रवासी 10
विश्व के प्रमुख शहरों में रहने वाले यहूदी लोगों के उद्धार के लिए मध्यस्थता करना।

दिन 8: अगली पीढ़ी 11
यहूदी युवाओं में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने से पुनरुत्थान के लिए प्रार्थना करना।

दिन 9: शांति और सुलह 12
इस्राएल के विविध लोगों के लिए परमेश्वर की शांति, संरक्षण और उद्धार की खोज करना।

दिन 10: यरूशलेम की शांति 13
यरूशलेम और उसके बाहर एक नए पिन्तेकुस्त के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

एक शहर को अपनाएं – 110 शहर 14
एक प्रमुख वंचित शहर के लिए दैनिक प्रार्थना ईंधन के लिए साइन अप करें

प्रस्तावना

> Brothers, my heart's desire and prayer to God for them is that they may be saved.
>
> Romans 10:1 ESV

पहरेदारों उठो! में आपका स्वागत है!

हमें बहुत खुशी है कि आप पहरेदारों उठो! में हमारे साथ शामिल हो रहे हैं। पेंटेकोस्ट रविवार तक आने वाले इन दस दिनों में, आपका दिल उत्साहित हो, आपकी प्रार्थनाएँ सशक्त हों, और जब हम साथ में यात्रा करते हैं तो इस्राएल और यहूदी लोगों के लिए आपकी मोहब्बत और भी गहरी होती जाए।

इस्राएल के लिए प्रार्थना मार्गदर्शिका क्यों?

मिशन अधिवक्ताओं और प्रार्थना नेताओं के रूप में कार्य करते हुए हमें यहूदी लोगों के लिए मध्यस्ता की आवश्यकता और भी ज्यादा स्पष्ट हुई। परमेश्वर की उद्धार योजना में इस्राएल एक केंद्रीय भूमिका रखता है, फिर भी कई यहूदी लोग सुसमाचार से वंचित रह जाते हैं। पवित्रशास्त्र में इस्राएल की प्रमुखता के बावजूद, इस्राएल और प्रवासी दोनों में यहूदी आबादी को हमारी केंद्रित प्रार्थना की आवश्यकता है।

दुनिया भर में लगभग 15 मिलियन यहूदी हैं, जिनमें से 6 मिलियन इस्राएल में रहते हैं। हालाँकि, यहूदी आबादी का केवल 1% ही मसीही विश्वासियों के रूप में पहचाना जाता है। जो शुआ प्रोजेक्ट के अनुसार, इस्राएल में 5 मिलियन से अधिक यहूदी अभी भी पहुँच के बाहर हैं, जबकि दुनिया भर के यहूदी समुदायों में कई अन्य अभी भी उद्धार का संदेश सुनने का इंतजार कर रहे हैं।

रोमियों 10:1 में पौलुस ने इस्राएल के उद्धार के लिए अपनी हृदय की इच्छा व्यक्त की:

"हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उन के लिये परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि वे उद्धार पाएं।"

प्रार्थना का यह आह्वान आज कलीसिया के कुछ हिस्सों में गहराई से गूंज रहा है, जबकि अन्य हिस्से इस आह्वान के प्रति जागरूक हो रहे हैं। मध्यस्थता की शक्ति ने उन क्षेत्रों में सफलता लाने में सिद्ध किया है जिन्हें लंबे समय से आध्यात्मिक रूप से कठिन माना जाता है। अपने इतिहास और महत्व के बावजूद, इस्राएल को सुसमाचार की सख्त जरूरत है। इस बात से हमें खुशी होती है कि इस्राएल में मसीही यहूदियों की संख्या 1970 के दशक के शुरूआती सालों में मुट्ठी भर से बढ़कर आज करीब 30,000 हो गयी है।

इस प्रार्थना मार्गदर्शिका का उद्देश्य विश्वासियों को इस्राएल के आध्यात्मिक जागरण, उद्धार और परमेश्वर के राज्य में उनकी भूमिका के लिए केंद्रित प्रार्थना में शामिल करना है। ये मार्गदर्शिका कलीसिया का आह्वान करती है कि वे प्रार्थना करें कि यहूदी लोग यीशु को मसीहा के रूप में पहचाने और साथ ही ये भी पहचाने कि परमेश्वर के प्रकट होने वाली योजना को पूरा करने में इस्राएल की भूमिका क्या है।

अंतर्राष्ट्रीय प्रार्थना कनेक्ट, अन्य प्रार्थना आंदोलनों के सहयोग से, दुनिया भर के 110 शहरों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है, जहाँ शिष्य बनाने वाली टीमें हैं जो सुसमाचार के साथ कई वंचित लोगों के समूहों और विभिन्न समुदायों तक पहुँच रही हैं। इसका उद्देश्य दुनिया के 110 सबसे वंचित शहरों को सुसमाचार के साथ पहुँचाना है, जहाँ महान आयोग की पूर्ति के लिए प्रार्थना की जाती है। यह मार्गदर्शिका 6 प्रमुख शहरों पर प्रकाश डालती है, साथ ही इस बारे में अधिक जानकारी के लिए लिंक भी देती है कि पूरे वर्ष उन शहरों के लिए प्रार्थना कैसे जारी रखी जाए।

यीशु की आज्ञा का पालन करने के अभिलाषी विश्वासियों के रूप में, इस्राएल और यहूदी लोगों के लिए प्रार्थना करना परमेश्वर के निरन्तर प्रेम, विश्वसनीयता , और उन्हें स्वयं के पूर्ण ज्ञान तक पहुंचाने की इच्छा की अभिव्यक्ति है।

हमारी प्रार्थना है कि यह मार्गदर्शिका आपको इस्राएल के लिए आपकी मध्यस्थता में प्रेरित करे, ताकि परमेश्वर की अपने लोगों के लिए की गई प्रतिज्ञाएं पूरी हों!
परमेश्वर आपको शांति प्रदान करें !

आईपीसी टीम
www.ipcprayer.org

दिन
01

यरूशलेम के लिए पहरेदार

यरूशलेम में मसीही यहूदी समुदाय के पहरेदारों के रूप में प्रार्थना करना।

वचन पर ध्यान:

रोमियों 11:13–14
रोमियों 1:16

“सो वैसे ही आज कल भी कुछ ऐसे लोग बचे हैं जो उसके अनुग्रह के कारण चुने हुए हैं।” — **रोमियों 11:5**

“क्योंकि यदि परमेश्वर के द्वारा उनके नकार दिये जाने से जगत में परमेश्वर के साथ मेलमिलाप पैदा होता है तो फिर उनका अपनाया जाना क्या मरे हुओं में से जिलाया जाना नहीं होगा?” — **रोमियों 11:5**

“उसने यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शांति स्थापित करने के लिए दोनों समूहों में से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न किया।” — **इफिसियों 2:15**

यशायाह 62:1–2 में, परमेश्वर यरूशलेम के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता के बारे में बात करते हुए कहते हैं, “सिय्योन के निमित्त मैं चुप न रहूँगा, और यरूशलेम के निमित्त मैं शान्त न रहूँगा, जब तक कि उसकी धार्मिकता प्रकाश के समान और उसका उद्धार जलती हुई मशाल के समान प्रकट न हो जाए।” इस वादे की पूर्ति अभी पूरी तरह से नहीं हुई है, और प्रभु यरूशलेम की आध्यात्मिक बहाली के लिए दिन–रात प्रार्थना में खड़े रहने के लिए पहरेदारों को बुलाना जारी रखते हैं। यशायाह 62:6–7 घोषणा करता है, “हे यरूशलेम, मैं ने तेरी शहरपनाह पर पहरुए बैठाए हैं; वे दिन–रात कभी चुप न रहेंगे। हे यहोवा को स्मरण करने वालों, चुप न रहो, Horizontal Ellipsis और, जब तक वह यरूशलेम को स्थिर कर के उसकी प्रशंसा पृथ्वी पर न फैला दे, तब तक उसे भी चैन न लेने दो।”

हम वैश्विक “आँसुओं के उपहार” के प्रकाशन लिए प्रार्थना करते हैं, ताकि कलीसिया इस्राएल और उसके लोगों के लिए परमेश्वर के हृदय को गहराई से महसूस कर सके। जिस तरह यीशु यरूशलेम पर रोया था, उसी तरह हम भी शहर के उद्धार के लिए करुणा और तत्परता के साथ हस्तक्षेप करें (लूका 19:41)।

चिंतन:

- किस तरह से मैं अपनी प्रार्थनाओं को परमेश्वर के भविष्यसूचक उद्देश्यों के साथ जोड़ते हुए, यरूशलेम के लिए रणनीतिक मध्यस्थता में सक्रिय रूप से शामिल हो सकता हूँ?
- कलीसिया का परमेश्वर की मुक्ति योजना को समझने के लिए मसीही यहूदियों का अस्तित्व क्यों महत्वपूर्ण है?
- किस तरह से मैं (या मेरा चर्च) मिशन और प्रार्थना में मसीही यहूदी विश्वासियों का सम्मान और उनके साथ साझेदारी कर सकता हूँ?

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **परमेश्वर को धन्यवाद दें यीशु में बचे हुए यहूदी विश्वासियों के लिए:** मसीही यहूदी समुदाय। दुनिया भर में मसीही कलीसियाओं के भीतर आध्यात्मिक शक्ति, साहस और एकता के लिए प्रार्थना करें।
- उत्पीड़न के विरुद्ध सुरक्षा तथा यहूदी विश्वासियों और व्यापक कलीसिया के बीच ऐतिहासिक विभाजन को दूर करने के लिए प्रार्थना करें।
- **स्थानीय और वैश्विक स्तर पर मिशन में उनकी प्रभावशीलता के लिए मध्यस्थता करना:** यहूदी और गैर–यहूदी दोनों संदर्भों में सुसमाचार के गवाह के रूप में।
- **यरूशलेम के लिए पहरेदारों को खड़ा करना:** प्रार्थना करें कि मध्यस्थ उठ खड़े हों, जो यरूशलेम की धार्मिकता और आत्मिक पुनर्स्थापना के फासलों के बीच खड़े होंगे।
- **यहूदी और अरब विश्वासियों के बीच प्रेम की बहाली:** इस्राएल में यहूदी और अरब विश्वासियों के बीच उपचार और एकता के लिए प्रार्थना करें।
- **यरूशलेम की धार्मिकता और महिमा:** प्रार्थना करें कि यरूशलेम की धार्मिकता पुनः स्थापित हो, तथा वह पृथ्वी पर स्तुति के रूप में महिमा से चमके।
- **प्रहरी के रूप में वैभिवक कलीसिया:** प्रार्थना करें कि वैश्विक कलीसिया एकजुट होकर वफादार प्रहरी के रूप में खड़ी हो तथा इस्राएल के उद्धार के लिए मध्यस्थता करे।

दिन 02

खोए हुओं के लिए पिता का हृदय

यहूदी लोगों को उनके स्वर्गीय पिता के अटूट प्रेम के पास वापस बुलाना।

वचन पर ध्यान:

यशायाह 49:14–16
व्यवस्था विवरण 32:10–11
जकर्याह 2:7–8

“परन्तु सिय्योन ने कहा, ‘यहोवा ने मुझे त्याग दिया है; मेरा प्रभु मुझे भूल गया है।’ ‘क्या कोई माता अपने दूध पीते बच्चे को भूल सकती है और अपने जन्मे हुए बच्चे पर दया नहीं कर सकती? चाहे वह भूल जाए, परन्तु मैं तुझे नहीं भूलूँगा! देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोदकर बनाया है; तेरी शहरपनाह सदैव मेरी दृष्टि के सामने बनी रहती है।’ ” — **यशायाह 49:14–16**

इस्राएल के लिए परमेश्वर का प्रेम अटूट है। हालाँकि सिय्योन को त्यागा हुआ महसूस होता है, लेकिन प्रभु ने एक दूध पिलाने वाली माँ की कोमल छवि का उदहारण देते हुए जवाब देता है – बल्कि उससे भी अधिक वफादार है। वह एक वाचा–पालन करने वाला परमेश्वर है। व्यवस्थाविवरण 32:10–11 उसकी देख–रेख का वर्णन करता है, कहता है कि इस्राएल “उसकी आँख का तारा” है, उसकी नजर का केंद्र है। जकर्याह 2:8 इसकी पुष्टि करता है, यह घोषणा करते हुए कि, “जो कोई तुम्हें छूता है वह उसकी आँख की पुतली को छूता है।”

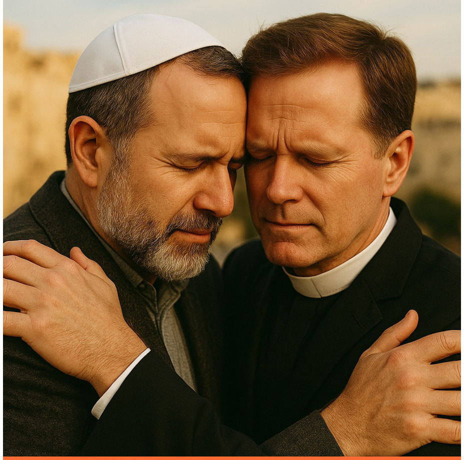

गवाही:

एक पादरी को पता चला कि जिस गिरजे की इमारत का अब उसकी मंडली इस्तेमाल करती है, वह नाजी युग के दौरान यहूदी विरोधी रैलियों का स्थल था। गहरे अपराध बोध से ग्रसित होकर, उसने पश्चाताप की एक विशेष सेवा में कलीसिया की अगुवाई की – न केवल ऐतिहासिक पापों के लिए बल्कि यहूदी लोगों के प्रति कलीसिया की निरंतर चुप्पी और उदासीनता के लिए भी। उसने स्थानीय मसीही मंडली से यहूदी विश्वासियों को सभा में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। मेल–मिलाप के एक गहन क्षण में, यहूदी बुजुर्गों ने आगे आकर क्षमा के शब्द कहे:

“तुमने जो कुछ भी कबूल किया है, प्रभु ने उसे पहले ही क्षमा कर दिया है। आइए, हम आज से आगे एक साथ चलें।”

चिंतन:

- मैं ऐसा हृदय कैसे विकसित कर सकता हूँ जो इस्राएल के प्रति पिता के प्रेम और चिंता को प्रतिबिम्बित करता हो?
- मैं किन तरीकों से कलीसिया और यहूदी समुदाय के बीच दया, चंगाई और आपसी समझ को बढ़ावा दे सकता हूँ?

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **छेदे हुए को देखने के लिए आंखें:** प्रार्थना करें कि इस्राएल देख पाए यीशु को, जिस मेमने का वध किया गया था और उसे पहचाने कि वह वही है “जिसे उन्होंने बेधा है” (जकर्याह 12:10)।
- **कलीसिया में पिता का हृदय:** परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह यहूदी लोगों के प्रति अपना गहरा प्रेम प्रकट करे, जिससे उनमें करुणा और उद्धार के लिए तत्परता जागृत हो। (2 पतरस 3:9)।
- **दृढ़ विश्वास और पश्चाताप:** प्रार्थना करें कि कलीसिया में किसी भी तरह की नफरत, संदेह, रोष या उदासीनता न रहे। मसीही यहूदियों और यहूदी विश्वासियों के उपचार के लिए प्रार्थना करें, जो अपने ईसाई भाइयों और बहनों द्वारा अस्वीकृत महसूस करते हैं।
- **दया की वर्शा:** इस्राएल पर परमेश्वर की दया की बड़ी वर्शा के लिए मध्यस्थता करें, जिससे पश्चाताप हो और यीशु को प्रतिज्ञाबद्ध मसीहा के रूप में मान्यता मिले (जकर्याह 13:1)।

दिन
03

अधिक मजदूरों के लिए प्रार्थना करें

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह सुसमाचार के संदेशवाहकों को पैदा करें और उन्हें विश्व भर के यहूदी लोगों तक भेंजें ।

"यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा, और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। जब उसने भीड़ को देखा, तो उसे उन पर तरस आया, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों के समान व्याकुल और लाचार थे। तब उसने अपने चेलों से कहा, "फसल तो बहुत है, पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये फसल के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत में मजदूर भेज दे।" — **मत्ती 9:35–38**

यीशु ने करुणा से भरकर खोए हुए लोगों तक खुशखबरी पहुँचाने के लिए कार्यकर्ताओं की जरूरत को पहचाना। आज, यह आह्वान जरूरी है – खासतौर पर यहूदी लोगों के लिए। हम उन यहूदियों की बढ़ती संख्या के लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं जो मसीहा और उद्धारकर्ता के रूप में येशु पर विश्वास करने लगे हैं। फिर भी, बहुत से लोग उस सत्य को सुनने का इंतजार कर रहे हैं जो उन्हें आजाद कर देगा।

यीशु थके हुए और बोझ से दबे लोगों को अपने पास आने और अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाने के लिए आमंत्रित करता है (मत्ती 11:28–29)। प्रार्थना है कि बहुत से लोग उसकी आवाज सुनें और खुले दिल से जवाब दें।

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **मजदूरों को भेजना:** फसल के प्रभु से प्रार्थना करें कि वह पौलुस के समान मजदूरों को खड़ा करे और भेजे, जिन्हें अन्यजातियों और विश्व भर के यहूदियों के बीच सुसमाचार का प्रचार करने के लिए बुलाया गया है (रोमियों 11:13–14)।
- **साहसी और बुद्धिमान गवाह:** उन गवाहों के लिए प्रार्थना करें जो आत्मा से प्रेरित हैं, करुणा से भरे हैं, और यहूदी हृदयों के प्रति संवेदनशील हैं। वे नम्रता और शक्ति के साथ सुसमाचार को आगे बढ़ाएँ। "उनके पैर कितने खूबसूरत हैं जो लोग शुभ समाचार लाते हैं !"
- **पुत्रत्व की भावना:** मध्यस्थता करें कि इस्राएल में अभिग्रहण की भावना कि एक नयी वर्षा हो, ताकि बहुत से लोग अपने हृदय की गहराइयों से पुकारें, "अब्बा, हे पिता।"
- **दैवीय नियुक्तियाँ:** रणनीतिक और आत्मा द्वारा संचालित मुलाकातों के लिए प्रार्थना करें जो सब यहूदी परिवारों को प्रेरित करें कि वे यीशु को अपना मसीहा और प्रभु मानें।

वचन पर ध्यान:

मत्ती 9:35-38
मत्ती 11:28-29

चिंतन:

- "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" कुरोमियों 1:16।
- हे प्रभु, मैं जानबूझकर और संवेदनशीलता से उन यहूदी लोगों के प्रति आपके प्रेम और सत्य का एक वफादार गवाह कैसे बन सकता हूँ जिन्हें आपने मेरे जीवन में स्थान दिया है?
- कौन से दृष्टिकोण, शब्द या कार्य यीशु को इस तरह से प्रतिबिम्बित करेंगे जो उनकी विरासत का सम्मान करेंगे और आपके हृदय पर प्रकाशित होंगें ?

दिन
04

पेंटेकोस्ट / शावोत

उत्सव मनाना कि परमेश्वर का पवित्र आत्मा उंडेला गया जिससे उनकी कलीसिया का सशक्तिकरण हुआ।

पिन्तेकुस्त, शवोत, "सप्ताह" का पर्व आज

शवोत (सप्ताहों का पर्व) यहूदी लोगों द्वारा प्रथम फलों की कटाई के उपलक्ष में मनाया जाता है। इस दिन को स्मरण दिवस के रूप में भी मनाते हैं कि जब सीनाई पर्वत पर यहूदी लोगों को "तौरात' दिया गया था। फसह के पचास दिन बाद, यह प्रेरितों के काम 2 में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का भी प्रतीक है। जब योएल की भविष्यवाणी को पूरा करते हुए और शक्ति के साथ कलीसिया का शुभारंभ करते हुए आत्मा आया – तो कई देशों से भक्त यहूदी यरूशलेम में एकत्र हुए थे।

विश्वासी, पेंटेकोस्ट को परमेश्वर की वफादारी और साहसपूर्वक जीने की शक्ति की याद दिलाने के रूप में मनाते हैं। यहूदी परंपरा में, रूत की पुस्तक शावोत के दौरान पढ़ी जाती है। रूत, एक गैर–यहूदी महिला थी जिसने नाओमी के प्रति वाचा प्रेम प्रदर्शित किया और इस्राएल के परमेश्वर को गले लगा लिया। उसकी कहानी परमेश्वर की मुक्ति योजना का पूर्वाभास कराती है जिसमें एक नए मनुष्य में यहूदी और – गैर यहूदी दोनों शामिल हैं (इफिसियों 2:15)।

वचन पर ध्यान:

प्रेरितों के काम 2:1–4
योएल 2:28–32
रूत 1:16–17
रोमियों 11:11

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **प्रेम और वफादारी – रूत 1:16 – 17** हे प्रभु, यहूदी लोगों के प्रति हमारा प्रेम बढ़ाइए। हमें रूत की तरह वफादारी और करुणा में चलना सिखाइए।
- **यीशु का उद्धारक के रूप में रहस्योद्घाटन – रूत 2:12:** यीशु, यहूदियों के दिलों में अपने आपको उनके स्वजन उद्धारक के रूप में प्रकट करें। अपने प्रेम को हमारे माध्यम से चमकने दें। जिस तरह यूसुफ अपने भाइयों के सामने एक हिब्रू के रूप में प्रकट हुआ था जो कि उनका भाई था। उसी तरह यीशु भी यहूदियों के सामने उनके मसीहा और बड़े भाई के रूप में प्रकट हो। उत्पत्ति 45
- **उपस्थिति और पुनरुत्थान की आग – प्रेरितों के काम 2:3:** हे पवित्र आत्मा, अपने लोगों में भर जा और शुद्ध कर दे। हमें जला दे कि हम इस्राएल को तुझसे, जो पवित्र है, ईर्ष्या करने के लिए उकसाएँ।

चिंतन:

- मैं इस सप्ताह यहूदी लोगों के प्रति परमेश्वर के वाचागत प्रेम को प्रत्यक्ष रूप से कैसे दिखा सकता हूँ?
- किन तरीकों से मेरा जीवन यीशु की गवाही दे रहा है, तथा यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को उसके मुक्तिदायक अनुग्रह की ओर खींच रहा है?

दिन 05

अलियाह – वापसी

विश्व भर के देशों से घर लौट रहे यहूदी लोगों के लिए मध्यस्थता करना।

वचन पर ध्यान:

यहेजकेल 36:22–24
रोमियों 11:24
यशायाह 54:7
यशायाह 62:4–5
यशायाह 35:10

यहेजकेल 36 में प्रभु ने घोशणा की कि वह इस्राएल को राष्ट्रों से पुनः एकत्रित करेगा—उनकी खातिर नहीं, बल्कि अपने पवित्र नाम की खातिर। यद्यपि राष्ट्रों के बीच उसका नाम अपवित्र किया गया था, परमेश्वर अपने लोगों को उनकी भूमि पर पुनः स्थापित करके इसे पवित्र करने का वादा करता है। यह वापसी, जिसे अलियाह कहा जाता है, परमेश्वर की वाचा की वफादारी को प्रकट करती है और राष्ट्रों के सामने उसके नाम को महिमा प्रदान करती है।

हालाँकि आज 8 मिलियन से ज्यादा यहूदी इस्राएल में रहते हैं, लेकिन उनमें से ज्यादातर अभी भी प्रवासी हैं। फिर भी परमेश्वर का वचन हमें भरोसा दिलाता है: "मैं तुम्हें राष्ट्रों के बीच से ले जाऊँगा और तुम्हें तुम्हारे निज देश में पहुंचा दूंगा" (यहेजकेल 36:24)। विश्वासियों के रूप में—जो येशुआ (रोमियों 11:24) के माध्यम से इस्राएल में जुड़े हुए हैं – हमारे पास अलियाह के लिए प्रार्थना में भागीदार होने का विशेषाधिकार है, जैसा कि यहेजकेल 36:37 आमंत्रित करता है।

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **उन्हें अपनी दया की ओर आकर्षित करें – यशायाह 54:7:** हे पिता, अपनी कृपा से अपने लोगों को करुणा और उद्देश्य के साथ उनकी भूमि पर वापस ले आएं। वे आपसे मिलें, आपकी दया पर विश्वास करें, और जब आप अपना वचन पूरा करें तो आपकी वफादारी के प्रति आस्वस्त हों।
- **पुन:स्थापित करें और वे आनंद मनाए – यशायाह 62:4–5** हे प्रभु, इस भूमि का अपने लोगों से विवाह करा दें। यरूशलेम को अब "उजाड़" नहीं बल्कि "विवाहित" और "सुखद" कहा जाए।
- **छुड़ाए हुए लोगों के लिए घर वापसी – यशायाह 35:10:** इस्राएलियों को राष्ट्रों से वापस इस्राएल की भूमि पर ले आएं ताकि वे आपकी वफादारी में आपसे मिल सकें। यीशु में विश्वास करने वालों के लिए भूमि में रहने और वफादार गवाह बनने का द्वार खोलें। उनकी वापसी पर खुशी और प्रसन्नता छा जाए।
- **परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह यहूदियों को पुन:** इस्राएल की भूमि पर एकत्रित करेरू "देखो, मैं उन को उन सब देशों से जिन में मैं ने क्रोध और जलजलाहट में आकर उन्हें बरबस निकाल दिया था, लौटा ले आकर इसी नगर में इकट्ठे करूंगा, और निडर कर के बसा दूंगा। और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा मैं उन को एक ही मन और एक ही चाल कर दूंगा कि वे सदा मेरा भय मानते रहें, जिस से उनका और उनके बाद उनके वंश का भी भला हो। मैं उन से यह वाचा बान्धूंगा, कि मैं कभी उनका संग छोड़ कर उनका भला करना न छोड़ूंगा; और अपना भय मैं उनके मन से ऐसा उप जाऊंगा कि वे कभी मुझ से अलग होना न चाहेंगे। मैं बड़ी प्रसन्नता के साथ उनका भला करता रहूंगा, और सचमुच उन्हें इस देश में अपने सारे मन ओर प्राण से बसा दूंगा।" (यिर्मयाह 32:37—41)।

चिंतन:

- मैं किस प्रकार यहूदी लोगों की भविष्यसूचक वापसी (अलियाह) के संबंध में प्रार्थना और कार्य में परमेश्वर के साथ भागीदार हो सकता हूँ?
- क्या मैं उसकी वाचागत योजना के भाग के रूप में इस आंदोलन के लिए मध्यस्थता कर रहा हूँ – उससे उसके नाम की खातिर राष्ट्रों के बीच अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने के लिए कह रहा हूँ?

दिन 06

भारत में यहूदी लोग

मैं भारत भर में यहूदी समुदायों तथा वहां यात्रा करने वाले इस्राएली युवाओं के लिए प्रार्थना करता हूँ।

वचन पर ध्यान:

रोमियों 10:1
रोमियों 11:25-27
1 राजा 10
यिर्मयाह 29:13
उत्पत्ति 12:3

भारत में यहूदियों का इतिहास प्राचीन काल से है, संभवतः सोलोमन के मंदिर (1 राजा 10) के दिनों से भी पुराना, बाद में 52 ई. में सेंट थॉमस के समय यहूदियों के आगमन के संदर्भ में। सदियों से, मुंबई और गुजरात में बेने इस्राएल, केरल में कोचीन यहूदी, मुंबई और पुणे में बगदादी यहूदी और मणिपुर और मिजोरम में बनी मेनाशे जैसे यहूदी समुदाय फलते–फूलते रहे। हालाँकि, 1948 में इस्राएल की स्थापना के बाद, कई लोगों ने अलियाह (इस्राएल वापस लौटना) बनाया, जिससे केवल एक छोटा समुदाय ही पीछे रह गया। आज, हजारों युवा इस्राएली हर साल वाराणसी, धर्मशाला और गोवा जैसी जगहों पर शांति की तलाश में भारत आते हैं।

इन 10 दिनों के दौरान हम एक वैश्विक प्रार्थना रणनीति जारी रखते हैं जो इस पर केंद्रित है 110 प्रमुख शहर दुनिया भर में। कृपया इन शहरों के लिंक पर क्लिक करके प्रार्थना करें कि बहुत से लोग यीशु का अनुसरण करें: मुंबई। वाराणसी।

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **मुक्ति के लिए मध्यस्थता:** प्रार्थना करें कि मसीह का भारतीय शरीर इन यहूदी यात्रियों के उद्धार के लिए मध्यस्थता करते हुए, इस अंतर को पाटने के लिए खड़ा रहे (रोमियों 10:1)।
- **बचाव और सुरक्षा:** युवा इस्राएलियों की यात्रा के दौरान सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें, और परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह स्वयं को उनके रक्षक के रूप में उनके सामने प्रकट करे (यशायाह 52:12बी)। जो इस्राएली पूरे दिल से सत्य की खोज कर रहे हैं, उन्हें परमेश्वर मिले। यिर्मयाह 29:13
- **भारत और इस्राएल के बीच मैत्री:** वैश्विक मंच पर भारत और इस्राएल के बीच गहरी, सच्ची मित्रता के लिए प्रार्थना करें, और यह कि खोए हुए लोगों की आंखें सत्य और आशीष से प्रकाशित हों, जैसा कि आपने वादा किया है (उत्पत्ति 12:3)।

चिंतन:

- मैं यहूदी पड़ोसियों या यात्रियों को मसीह के प्रेम के साथ आतिथ्य कैसे प्रदान कर सकता हूँ?
- यहूदी यात्रियों के बीच उनके मिशन के बारे में मैं भारत की कलीसिया से क्या सीख सकता हूँ?

दिन 07

यहूदी प्रवासी

विश्व के प्रमुख शहरों में रहने वाले यहूदी लोगों के उद्धार के लिए मध्यस्थता करना।

इस्राएल के लिए पौलुस की प्रार्थना राष्ट्र के उद्धार के लिए हृदय से की गई पुकार है: 'भाइयों, मेरे हृदय की अभिलाषा और उनके लिए परमेश्वर से प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएं।' (रोमियों 10:1)। रोमियों 11 में प्रकट रहस्य दर्शाता है कि इस्राएल का कठोर होना आंशिक और अस्थायी है, इस वादे के साथ कि जब अन्यजातियों की पूर्णता आएगी, तो सारा इस्राएल बच जाएगा। जैसा कि लिखा है, 'उद्धारकर्ता सिय्योन से आएगा, वह याकूब से अभक्ति को दूर करेगा।' (रोमियों 11:26–27)।

उत्पत्ति 11 में बाबुल के समय से ही यहूदी राष्ट्रों में बिखरे हुए हैं। यीशु के अनुयायियों के लिए प्रार्थना करें कि वे दिल खोलकर यहूदी लोगों और उनके समुदायों से दोस्ती करने के लिए तैयार रहें, ताकि इन राष्ट्रों में रहने वाले यहूदियों की आँखें खुल जाएँ और वे यीशु को मसीहा के रूप में जान सकें।

722 ईसा पूर्व में उत्तरी राज्य के इस्राएलियों को असीरिया में निर्वासित कर दिया गया था और असीरियाई लोगों को इस्राएल लाया गया था, जहाँ वे यहूदियों के साथ नस्लीय रूप से घुलमिल गए और सामरी बन गए। परमेश्वर हमेशा से यह देखने के लिए दृढ़ संकल्पित रहा है कि इस्राएल न केवल उसके प्रति बल्कि उसके मिशन उद्देश्य के प्रति भी वफादार बने। कैद से यहूदियों के इस्राएल लौटने के बाद, परमेश्वर का प्रचारक उद्देश्य डायस्पोरा (फैलाव) के माध्यम से पूरा किया गया। इस दौरान, यहूदियों के एक वफादार अवशेष ने राष्ट्रों के बीच परमेश्वर का नाम फैलाया।

आज यहूदियों की सबसे ज्यादा आबादी इन शहरों में पाई जाती है, न्यूयॉर्क, पेरिस, वैंकूवर, लंदन, मॉस्को और ब्यूनस आयर्स। साल भर हम जानबूझकर **110 प्रमुख शहरों** के लिए प्रार्थना करते हैं जहाँ हम देखते हैं कि शिष्यों का राज्य आंदोलन बढ़ रहा है।

गवाही:

तेहरान में, एक इस्राएली आस्तिक ने ईरान के लिए हिब्रू में प्रार्थना की, और एक ईरानी नेता ने इस्राएल के लिए फारसी में प्रार्थना करके जवाब दिया। बाद में, एक नौरोज उत्सव के दौरान, 250 ईरानियों और अफगानियों ने सुसमाचार सुना – 35 ने बाइबल का अनुरोध किया। यह ईश्वर के परिवार में उपचार और एकता की एक तस्वीर है।

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **विश्वास का बढ़ना:** प्रार्थना करें कि विश्व भर में यहूदी विश्वासियों के बीच आस्था के बीज पनपें।
- **वादा पूरा करना:** परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह अपना वचन पूरा करे और इस्राएल को उद्धार दिलाए।
- **पवित्र ईर्ष्या:** कि गैर–यहूदी विश्वासी यहूदियों के दिलों में मसीहा की खोज करने के लिए उत्तेजना जगाएं।
- **मसीह का शरीर यहूदी पड़ोसियों के साथ नम्रता और प्रेम से मित्रता करे:** ताकि वे यीशु को मसीहा के रूप में देख सकें।
- प्रार्थना कीजिए कि दुनिया भर के हजारों परमेश्वर–भक्त यहूदियों के साथ मिलकर यहोवा को पूरे विश्व का प्रभु स्वीकार करें और मसीहा के आने का मार्ग प्रशस्त करें।

वचन पर ध्यान:

रोमियों 10:1
रोमियों 11:25–27

चिंतन:

- मैं यीशु को किस प्रकार प्रतिबिम्बित कर सकता हूँ जिससे इस्राएल में अपने उद्धारकर्ता के लिए लालसा जागृत हो?
- क्या मैं यहूदी लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धारक उद्देश्य को उसके वैश्विक मिशन के केन्द्र के रूप में स्वीकार कर रहा हूँ?
- मैं किस तरह से जानबूझकर सूचित मध्यस्थता और आत्मा–निर्देशित कार्य के माध्यम से उनकी पुनर्स्थापना के लिए एक मिशनरी बोझ पैदा कर सकता हूं?

दिन 08

अगली पीढ़ी

यहूदी युवाओं में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के माध्यम से पुनरुत्थान के लिए प्रार्थना करना।

वचन पर ध्यान:

यशायाह 44:1–5
योएल 2: 23-24

यशायाह 44:1—5 में, परमेश्वर इस्राएल पर, विशेष रूप से अगली पीढ़ी पर अपनी आत्मा उंडेलने का वादा करता है। यह आध्यात्मिक वर्षा परिवर्तन और नवीनीकरण की ओर ले जायेगी, पहचान की एक नई भावना लाएगी, जहाँ कई लोग साहसपूर्वक घोषणा करेंगे, "मैं प्रभु का हूँ।" जब हम प्रार्थना करें, तो हम परमेश्वर से इस्राएल के युवाओं के दिलों को जगाने के लिए कहें ताकि वे उसे घनिष्ठता से और व्यक्तिगत रूप से जान सकें, ताकि देश की आध्यात्मिक प्यास को संतुष्ट किया जा सके।

योएल 2 वह तुम्हारे लिए पहले की तरह ही भरपूर वर्षा, शरद ऋतु और वसंत ऋतु की वर्षा भेजेगा। खलिहान अनाज से भर जाएँगेय कुण्ड नये दाखमधु और तेल से भर जाएंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं इस्राएल में हूँ, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ, और कोई दूसरा नहीं है; मेरे लोगों को फिर कभी लज्जित नहीं होना पड़ेगा। "और उसके बाद, मैं अपनी आत्मा सब लोगों पर उंडेलूँगा। तुम्हारे बेटे और बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। और जो कोई यहोवा का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा; क्योंकि सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में उद्धार होगा"।

चिंतन:

- किस तरह से मैं इस्राएल में अगली पीढ़ी के लिए पवित्र आत्मा के नवीकरण का अनुभव करने हेतु प्रार्थना कर सकता हूँ?
- मैं इस्राएल में युवाओं की जागृति और परमेश्वर के राज्य के लिए साहसी गवाहों के रूप में परिवर्तित होने में सहायता करने के लिए क्या कदम उठा सकता हूँ?

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के लिए प्रार्थना करें:** इस्राएल पर, खास तौर पर युवा पीढ़ी पर पवित्र आत्मा की शक्तिशाली वर्षा के लिए प्रार्थना करें। परमेश्वर से प्यासी जमीन पर पानी डालने और सूखी जगहों को पुनर्जीवित करने के लिए कहें।
- **पहचान परिवर्तन के लिए प्रार्थना करे:** इस्राएल में बहुत से लोगों के लिए प्रार्थना करें कि वे घोषणा करें कि, "मैं प्रभु का हूँ" और परमेश्वर की वाचा में अपनी पहचान को स्वीकार करें।
- **युवाओं में पुनरुत्थान के लिए प्रार्थना करे:** इस्राएली युवाओं में आध्यात्मिक जागृति लाने के लिए मध्यस्थता करें, ताकि वे आध्यात्मिक रूप से विकसित हो सकें, नदियों के किनारे उगने वाले विलो के समान फल—फूल सकें, तथा परमेश्वर से जुड़े होने की गहरी भावना के साथ जीवन जी सकें।

दिन 09

शांति और सुलह

इस्राएल के विविध लोगों के लिए परमेश्वर की शांति, संरक्षण और उद्धार की खोज करना।

"वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को मिटाता है; वह धनुष को तोड़ता, और भाले को दो टुकड़े कर डालता है, और रथों को आग में झोंक देता है।" — **भजन 46:9**

"राजाओं और सभी अधिकारियों के लिए प्रार्थना करें, ताकि हम पूरी भक्ति और पवित्रता में शांतिपूर्ण और गंभीरता से जीवन बिताएं।" — **1 तीमुथियुस 2:2**

शांति केवल संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि न्याय, सत्य और बहाल रिश्तों की उपस्थिति है। 1963 में, डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने समझदारी से कहा, "सच्ची शांति केवल तनाव की अनुपस्थिति नहीं है; यह न्याय की उपस्थिति है।" सुलह निष्क्रिय नहीं है – यह उपचार का एक सक्रिय और अक्सर महंगा प्रयास है। इसके लिए अन्याय का सामना करना, दर्द को स्वीकार करना और हर व्यक्ति में ईश्वर की छवि का सम्मान करना आवश्यक है।

युद्ध और विभाजन के समय में, यीशु अपने अनुयायियों को मेल करवाने वाले बनने के लिए कहते हैं (मैथ्यू 5:9), नम्रता और प्रेम में चलते हुए। मध्य पूर्व में चल रहे संघर्ष ने अरब और यहूदी विश्वासियों और मसीही यहूदियों के बीच मेल–मिलाप के बढ़ते आंदोलन को उजागर किया है। यह एकता यूहन्ना 17 में यीशु द्वारा की गई प्रार्थना का एक जीवंत प्रमाण है: कि उसके अनुयायी एक हों, जैसे वह और पिता एक हैं।

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **विश्वासियों के बीच प्रेम और एकता:** यहूदी, अरब और गैर–यहूदी विश्वासियों के बीच गहरे प्रेम और एकता के लिए प्रार्थना करें। यूहन्ना 17 में यीशु की प्रार्थना हमारे दिनों में पूरी हो, और विभाजन, पूर्वाग्रह और अविश्वास की दीवारें ढह जाएँ।
- **यीशु की प्रार्थना की पूर्ति (यूहन्ना 17):** मसीह के शरीर में दृश्यमान एकता के लिए मध्यस्थता करें – विभिन्न जातियों, संप्रदायों और पीढ़ियों के बीच – परमेश्वर के मुक्तिदायी प्रेम के संसार के लिए एक साक्षी के रूप में।
- **विनम्रता और सम्मान:** यहूदी और अरब विश्वासियों के बीच विनम्रता और आपसी सम्मान के लिए प्रार्थना करें। प्रभु से प्रार्थना करें कि वे समझ और सम्मान की भावना को बढ़ावा दें, ताकि वे मसीहा में एक नए व्यक्ति के रूप में एक दूसरे को गले लगा सकें।

वचन पर ध्यान:

भजन संहिता 46:9
1 तीमुथियुस 2:2
यूहन्ना 17:20-23
भजन संहिता 46:9
1 तीमुथियुस 2:2

चिंतन:

- क्या मैं अपने रिश्तों और समुदाय में शांति कायम करने वाला व्यक्ति हूँ?
- किस तरह से मैं लोगों के बीच मेल–मिलाप के परमेश्वर के कार्य में सक्रिय रूप से भाग ले सकता हूँ?

दिन 10 शांति यरूशलेम की

यरूशलेम और उसके बाहर एक नए पिन्तेकुस्त के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें।

"यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना करो! 'जो तुझ से प्रेम रखते हैं वे सुरक्षित रहें! तेरी शहरपनाह के भीतर शांति और तेरी मीनारों में सुरक्षा हो।'" — **भजन संहिता 122:6-7**

यहूदी लोगों की तुलना यीशु के दृष्टांत (लूका 15) में वर्णित "बड़े बेटे" से की जा सकती है जो एक पिता के प्रेम को दर्शाता है। हालाँकि कई मायनों में वफादार, बड़ा भाई छोटे भाई के वापस आने पर उतनी ज्यादा खुशी का एहसास नहीं कर पाया। हालांकि, पिता की प्रतिक्रिया दया से भरी हुई है: "मेरे बेटे, तुम हमेशा मेरे साथ हो, और मेरे पास जो कुछ भी है वह तुम्हारा है। लेकिन हमें जश्न मनाना था तेरा भाई मर गया था, फिर जी गया है; खो गया था, अब मिल गया है।" (आयत 31:32)

इस कहानी में, हम पिता की गहन इच्छा की झलक देखते हैं—न केवल खोए हुओं का स्वागत करने की, बल्कि विश्वासियों को भी मिलाने की। परमेश्वर यहूदी लोगों के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करने को तरसते हैं ताकि वे यीशु मसीह में अपनी विरासत की पूर्णता की ओर खींचे चले आयें।

हम इस विशाल आध्यात्मिक आवश्यकता को भी स्वीकार करते हैं: में 8.8 मिलियन लोग सुसमाचार की गवाही से इस्राएल वंचित हैं—उनमें से 60% यहूदी और 37% मुस्लिम हैं। फिर भी परमेश्वर का प्रेम हर एक तक फैला हुआ है, और उसके वादे कायम हैं।

प्रार्थना का केन्द्रबिन्दु:

- **आध्यात्मिक आँखें और कान खुल:** यहूदी लोगों के लिए प्रार्थना करें कि उन्हें मसीहा के रूप में यीशु का रहस्योद्घाटन प्राप्त हो। "तुम सुनोगे तो अवश्य, पर समझोगे नहीं... परन्तु धन्य हैं तुम्हारी आंखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं।" — यशायाह 6:9-10, मत्ती 13:16-17
- **पवित्र आत्मा का उंडेला जाना:** एक नए पेंटेकोस्ट की मांग करें यरूशलेम में और उससे भी आगे। जिस तरह प्रेरितों के काम 2 में आत्मा यहूदी विश्वासियों पर उतरा, उसी तरह एक और शक्तिशाली कदम के लिए प्रार्थना करें जो जागृति, पश्चाताप और यीशु में आनंद से भरा विश्वास लाए।
- **परमेश्वर की वाचाओं की पूर्ति:** परमेश्वर की अपने वचन और अपने लोगों के प्रति वफादारी की घोषणा करें। पूरे इस्राएल में उसके अचूक प्रेम के प्रकट होने के लिए प्रार्थना करें। खुले आकाश, खुले घर और खुले दिलों के लिए प्रार्थना करें।
- **चमत्कारिक पुष्टि:** उन चिन्हों और चमत्कारों के लिए मध्यस्थता करें जो सुसमाचार की सच्चाई की पुष्टि करते हैं और कई लोगों को उद्धार की ओर आकर्शित करते हैं।

वचन पर ध्यान:

भजन संहिता 122:6-7
लूका 15:10
लूका 15:28-32
यशायाह 6:9-10
मत्ती 13:16-17
1 कुरिन्थियों 15:20

चिंतन:

- किस तरह से मैं "यरूशलेम की शांति के लिए प्रार्थना" करने के बाइबिल के आह्वान का सक्रिय रूप से और लगातार जवाब दे रहा हूँ? इस आज्ञा का ईमानदारी से पालन करना मेरे दैनिक जीवन में कैसा दिखता है?
- हम किस तरह से इस्राएल के उद्धार के लिए सक्रिय रूप से प्रार्थना कर सकते हैं और मसीही यहूदी समुदाय की गवाही का समर्थन कर सकते हैं?

110 Cities

एक शहर को अपनाएं
110 शहर

हमारा लक्ष्य यह है कि दुनिया के 110 सबसे वंचित शहरों तक सुसमाचार पहुंचाया जा सके, तथा प्रार्थना की जाए कि उन शहरों में हजारों मसीह–प्रशंसक कलीसियाएं स्थापित की जा सके।

हमारा मानना है कि प्रार्थना ही कुंजी है! इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, हम 110 मिलियन विश्वासियों की शक्तिशाली प्रार्थनाओं के साथ इस आउटरीच को कवर करने के लिए विश्वास में पहुँच रहे हैं – सफलता के लिए, सिंहासन के चारों ओर, चौबीसों घंटे और दुनिया भर में प्रार्थना करते हुए!

क्या आप प्रार्थना करेंगे?

हम आपको इन शहरों के लिए प्रतिदिन 10 या 15 मिनट प्रार्थना करने के लिए आमंत्रित करना चाहते हैं!

हम इन शहरों में नए हाउस चर्चों की स्थापना के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं। इन 110 शहरों में 90% ऐसे लोग रहते हैं जो सुसमाचार से वंचित हैं। आइए हम शिष्य बनाने के प्रभाव के लिए प्रार्थना करें जो इन लोगों और स्थानों में कई गुना बढ़ जाएगा।

यहाँ साइन अप करें–अपने चुने हुए प्रार्थना समय के लिए या तो व्यक्तिगत रूप से या अपने संगठन के कुछ अन्य लोगों के साथ। जब आप प्रार्थना करने के लिए साइन अप करेंगे तो आपको अपने समय का एक रिमाइंडर ईमेल प्राप्त होगा और साथ ही इन शहरों के लिए मुख्य प्रार्थना बिंदुओं का एक लिंक भी मिलेगा!

https://110cities.pray4movement.org

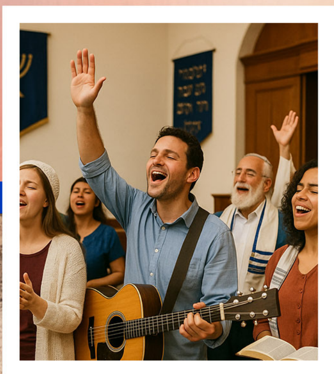

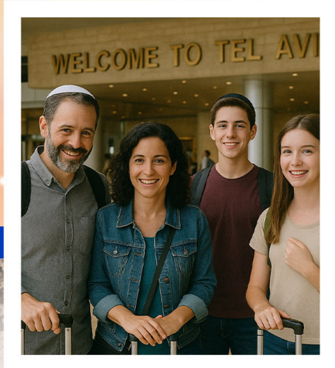

पहरेदारों उठो!

10 दिन की पेंटेकोस्ट यात्रा प्रार्थना, यहूदी विश्व के लिए

www.110cities.com

इस गाइड को इंटरनेशनल प्रेयर कनेक्ट ने उपरोक्त भागीदारों के साथ मिलकर शोध करके लिखा है। चित्र मशीन द्वारा बनाए गए हैं और केवल उदाहरण के लिए हैं। जीवित या मृत लोगों से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोग है। यह संसाधन केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिए स्वतंत्र रूप से प्रदान किया गया है। यदि आप व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए सामग्री का पुनरुत्पादन, प्रसार या पुनर्प्रकाशन करना चाहते हैं तो कृपया हमसे संपर्क करें। www.ipcprayer.org